>

Title: Need to enhance the Minimum Support Price of cotton and provide financial relief to the distressed cotton farmers.

श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर): देश के कपास उत्पादक किसानों को उनके लागत मूल्य के अनुसार दाम नहीं मिलने से वे परेशान हैं। पिछले वर्ष वैश्विक बाजार में कपास के मूल्य में तेजी के कारण देशांतर्गत दामों में उछाल आने से किसानों को 6500 से 7000 रूपये प्रति क्विंटल दाम मिला था लेकिन इस वर्ष वैश्विक बाजार में कपास के मूल्य में आई मंदी के कारण देश में भी कपास के दाम गिर गये हैं। किसानों की बढ़ती लागत मूल्य का विचार किये बिना न्यूनतम समर्थन में कोई बढ़ोतरी किये बिना 3200 रूपये प्रति क्विंटल दाम सुनिश्चित करने से किसानों पर कुठाराघात हुआ है। इससे स्थानीय स्तर पर निजी व्यापारियों ने कपास खरीद में दाम घटाकर किसानों से कम दामों में खरीद शुरू की, फलस्वरूप किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। राष्ट्रीय कृषि मूल्य आयोग ने 2011-12 के लिए कपास के न्यूनतम समर्थन मूल्य में 900 रूपये की बढोतरी की सिफारिश करने के बाद कपास का मूल्य 4200 रूपये प्रति क्विंटल होने के अनुमान से किसानों को थोड़ा दिलासा मिल सकती थी लेकिन सरकार ने कपास के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि नहीं करने से किसान निजी व्यापारियों की गिरफ्त में फंसकर औने-पौने मूल्य में कपास बेच रहे हैं। महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा कपास के खरीद केन्द्र नहीं खोलने से किसानों का दोहरा शोषण हो रहा है।

देश में कपास उत्पादक क्षेत्र में अधिक संख्या में किसान आत्महत्या कर रहे हैं। कपास उत्पादक क्षेत्र को किसान आत्महत्या पूर्वण क्षेत्र कहा जाता है। कपास का लागत मूल्य के अनुसार खरीद मूल्य नहीं मिलने से किसानों और आत्महत्या की तरफ बढ़ सकता है। बढ़ती महंगाई, बीज, खाद और मजदूरी के बढ़ते मूल्यों को देखते हुए कपास का कम से कम 6000 से 7000 रूपये प्रति क्विंटल दाम सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। आज इसी मांग को लेकर किसानों द्वारा आंदोलन के माध्यम से संघर्ष किया जा रहा है। इन संघर्षरत किसानों की जायज मांग को देखते सरकार किसानों के कपास का समर्थन मूल्य 6 से 7 हजार रूपये तथा कपास उत्पादक किसानों को हुए नुकसान की भरपाई करने के लिए उन्हें प्रति एकड़ 20 हजार रूपये की सहायता राशि उपलबध कराए। मैं कपास उत्पादक किसानों के आजीविका से जुड़े मामले पर सरकार द्वारा तत्काल कारवाइ करने की पुरजोर मांग करता हूँ।